पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 (1) इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दान दाताओं से अपील

सभी दानी महानुभावों से अपील है कि आर्य युवक परिषद् को तन-मन-धन से अपना आशीर्वाद प्रदान करें। दान राशि कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

डॉ. अनिल आर्य, अध्यक्ष — महेन्द्र भाई, महामंत्री

वर्ष-29 अंक-1 ज्येष्ठ-2069 दयानन्दाब्द 189 1 जून से 15 जून 2012 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

दिल्ली में आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर शानदार सफलता के साथ सम्पन्न

सुसंस्कृत बालिकायें ही परिवार व समाज का निर्माण करेंगी -डा.रमाकांत गोस्वामी

संस्कारवान नारी ही आदर्श समाज का निर्माण कर सकती है -किरण चोपड़ा

डॉ. रमाकांत गोस्वामी को सम्मानित करते बायें से श्रीमती वेदप्रभा बरेजा, अर्चना पुष्करणा, नीता खन्ना, शशिप्रभा आर्या, डॉ. अनिल आर्य, आदर्श सहगल आदि व दायें चित्र में शिविरार्थी बालिकाएं अभिवादन करते हुए।

नई दिल्ली। रविवार 27 मई 2012 केन्द्रीय आर्य युवती परिषद्, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में गत 20 मई से आर्य समाज राजेन्द्र नगर में चल रहे ''आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर'' का भव्य समापन हो गया। शिविर में 72 बालिकाओं ने आठ दिन तक नैतिक शिक्षा, योगासन, संन्ध्या-यज्ञ, जूडो-कराटे, आत्म रक्षा शिक्षण, डम्बल, लेजियम, लाठी, भाषण कला, व्यक्तित्व विकास एवम् भारतीय संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त की।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि डा.रमाकांत गोस्वामी (श्रम मंत्री,दिल्ली सरकार) ने कहा कि सुसंस्कृत नारी ही सुसंस्कृत परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। एक बालिका के प्रशिक्षण से दो परिवार संवरते हैं। आर्य समाज का देश की आजादी में, शिक्षा के प्रचार प्रसार करने में व अन्धविश्वास पाखण्ड दूर करने में उल्लेखनीय योगदान रहा है, आज फिर से आर्य जनों को कार्य क्षेत्र में आगे आने की आवश्यकता है। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों की रक्षा में आर्य समाज के महत्वपूर्ण योगदान की सराहना की,साथ ही कहा कि आज संस्कृत को समाप्त करने का षड्यन्त्र चल रहा है लेकिन आर्य समाज और सनातन धर्म ऐसा नहीं होने देगे।

समापन समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती किरण चोपड़ा (चेयरपरसन,वरिष्ठ नागरिक केसरी कल्ब) ने कहा कि संस्कारों से ही व्यक्ति अपने कुल व समाज का नाम रोशन करता है और संस्कारवान नारी ही आदर्श समाज का निर्माण कर सकती है, इस दिशा में आर्य युवती परिषद् का प्रयास अत्यन्त सराहनीय है ।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्रीमती शशिप्रभा आर्या (प्रधाना, प्रान्तीय आर्य महिला सभा) ने की व ध्वजारोहण समाजसेवी उमा बजाज ने किया। समापन समारोह की अध्यक्षता श्रीमती सावित्री चावला ने की। समारोह का संचालन आदर्श सहगल ने किया।

इस अवसर पर सुषमा शर्मा,सावित्री शर्मा, प्रवीन आर्या, नरेन्द्र सुमन, के मधुर भजन हुए । दयानन्द मॉडल स्कूल,अमर कालोनी के बच्चों का समूह गान हुआ। निगम पार्षद राजेश भाटिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, विधायक कुलवन्त राणा, हीरालाल चावला, नीता खन्ना, अशोक सहगल, नरेन्द्र वलेचा, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,अर्चना पुष्करना,योगेन्द्र शास्त्री,प्रवीन आर्य आदि ने भी अपने विचार रखे। प्रमुख रूप से आर्य नेता जगदीश आर्य, विम्मी अरोड़ा, विजय भाटिया, अशोक मिश्रा, हर्ष बवेजा, सुदेश भगत, वेदप्रभा बरेजा, उर्मिला आर्या,अन्जू जावा,दुर्गाप्रसाद कालरा, सुदर्शन खन्ना, अमृत आर्या, प्रभा ग्रोवर, आशा गुप्ता, सीमा तोमर, रविन्द्र मेहता,महावीरसिंह आर्य आदि उपस्थित थे।

बालिकाओं द्वारा व्यायाम प्रदर्शन के आकर्षक कार्यक्रम दिखाये गये। शिविर को सफल बनाने में प्रभा सेठी, सौरभ गुप्ता, आशीष सिंह, योगेन्द्र आर्य, सुधा वर्मा, सन्तोष वधवा, आचार्य कैलाश, कै.अशोक गुलाटी, राजेन्द्र लाम्बा, राज सलूजा, कमला मसन्द, राकेश भटनागर, सुरेन्द्र गुप्ता, ओमवीर सिंह, के.एल. राणा, देवदत्त आर्य आदि का विशेष योगदान रहा । ऋषि लंगर का आनन्द लेकर सभी विदा हुए ।

मुख्य अतिथि श्रीमती किरण चोपड़ा को सम्मानित डॉ. अनिल आर्य साथ में प्रवीण आर्या व सावित्री चावला। द्वितीय चित्र में पुरस्कृत कन्याओं के साथ विशिष्ट अतिथिगण।

विकृतियों के उन्मुक्त उभार और पूर्ति का यह आयोजन प्रतिबंधित हो

-अवधेश कुमार

आईपीएल को क्या नाम दें? इलिगल प्रोपर्टी लीग, इंडियन प्रोसिटच्यूशन लीग, इंडियन पंटर्स लीग, इंडियन पर्वर्शिव लीगेंसब इस पर फिट बैठता है। यह कहना भी ठीक लगता है कि प्रोहिबिशन यानी मद्य निषेध का उल्टा कोई शब्द ढूंढ लीजिए और फिर उसका लीग मान लीजिए। कुछ इसे तुकबंदी के लिए इंडियन पिअक्कर्स लीग भी कह रहे हैं। ये सारे इसके उपयुक्त हैं, पर उसे किसी खेल का प्रिमियर लीग नहीं कहा जा सकता है। मैच फिक्सिंग के स्टिंग से लेकर, एक ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी द्वारा अमेरिकी बाला के साथ कथित यौनाचार की कोशिश व शाहरुख खान द्वारा नशे की हालत में स्टेडियम के गार्ड को धमकी देने की सुर्खियां बनती घटनाएं उन सारे लोगों के लिए मजाक के विषय हैं जो आईपीएल को निकट से देख रहे हैं और उसकी विकृतियों से अपने को बचाए हुए हैं। उनके अनुसार यह तो शराब की बोतलों से भरी मधुशाला में एक प्याला शराब खिड़की से झलक जाने या सेक्स की मंडी में एक जोड़े की उन्मुक्त क्रिया दिख जाने या फिर हवाला के बाजार से बाहर निकलते किसी व्यक्ति द्वारा भूलवश एक छोटे लेनदेन की आत्मस्वीकृति पर मचे हंगामे जैसा है। मजे की बात देखिए कि अभी भी हमारे देश में कुछ लोग इसे खेल श्रृंखला मानते हुए इसमें सुधार आदि का शालीन सुझाव दे रहे हैं। मैच फिक्सिंग के आरोप पर हम कोई अंतिम मत देना नहीं चाहते। हालांकि भारत में मैच फिक्सिंग के सबसे बड़े प्रकरण की जांच रिपोर्ट से कोई संतुष्ट नहीं था और ज्यादा संभावना उसकी पुनरावृत्ति की ही है। तब भी क्रिकेट बोर्ड को सच से ज्यादा खाल बचाने की चिंता थी और आज भी उसका मूल सरोकार यही होगा। किन्तु हमारा सरोकार दूसरा होना चाहिए।

वास्तव में आईपीएल जैसी खेल श्रृंखला से नैतिकता, ईमानदारी, खेल निष्ठा, कोई आपसी विवाद उभरने पर परस्पर व्यवहार में शालीनता, वासना संयम की उम्मीद करने की बात वैसी ही है जैसे किसी बबूल के पेंड़ से कांटे की जगह आम फलने की उम्मीद करना। जरा सोचिए, आईपीएल वाकई खेल प्रतिस्पर्धा है या पैसे, सुरा, सुन्दरी के साथ गेंदबाजी और बल्लेबाजी का एक ऐसा वासनामूलक उत्तेजनापूर्ण जलसा जिसकी चेतना भी धन और उमंग है, नियम भी और परिणति भी? चीयर लीडर्स और अन्य सेलिब्रिटी डांसरों, परफॉर्मरों का उत्तेजक और तरंग पैदा करनेवाले प्रदर्शन, उसके साथ खेल और फिर रात में शराब और सुन्दरियों के साथ पार्टियां। इसे आप खेल कहेंगे कि भोग और ऐय्यासी सहित सारे पर्वर्शन यानी विकृतियों का जमावड़ा। आईपीएल जैसे आयोजन किसके लिए है? जिनका कभी खेल से कोई लेना-देना नहीं वे अपनी गांठों की बल पर खिलाड़ियों की नीलामी में अधिकतम बोली लगाकर खरीदते हैं और फिर उनसे मैदान पर गेंदबाजी और बल्लेबाजी का मजमा लगवाते हैं। उनके पास दूसरी टीमों को खिलाड़ी बेचने का भी अधिकार है। धन और ऐश्वर्य का समस्त भौंडा प्रदर्शन इसमें शामिल है। आईपीएल में ऐसा कौन सा पहलू है जिससे किसी के अंदर ईमानदार, नैतिक और आदर्श रहने की प्रेरणा मिले? टीमों की फ्रेंचायजी और उसमें शेयर के लिए कितने कुकर्म होते हैं, कैसे धन का हेरफेर होता है, किसी तरह फ्रेंचायजी को मैनेज करने का खेल होता है इसके बारे पहले भी बहुत कुछ आ चुका है। पूर्व विदेश राज्यमंत्री शशि थरुर की वर्तमान पत्नी और तब की प्रेमिका को टीम का अंशदान दिलाने की वह कथा देश भूला नहीं है जिसके कारण उनका पद भी गया। ललित मोदी और उनके सहयोगियों पर जांच चल रही है।

समय की इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है कि भारत में हमने आईपीएल को खेल श्रृंखला का अंग मान लिया। अगर बाजार की चकाचौंध तथा धन और भोग साधन की प्रचुरता के कारण एक बड़े वर्ग की जीवन शैली नहीं बदली होती, सूचना संजाल, सोशल नेटवर्किंग व टीवी चैनलों द्वारा उन्मुक्त भोग, कामोत्तेजना जैसी विकृतियों को महिमामंडित किए जाने के फलस्वरुप जीवन का नजरिया नहीं बदला होता तो ऐसे आयोजनों की अनुमति ही नहीं मिलती। अगर मिलती तो इसका इतना विरोध होता कि इसे बंद करने के सिवा आयोजकों के सामने कोई विकल्प ही नहीं होता। इसके विपरीत इसे दर्शक भी मिलते रहे, प्रायोजक भी और प्रसारण करने वाले चैनल की टीआरपी बढ़ती रही। यह ऐसे स्वच्छंद जमावड़ा का क्रम है जिसमें आयोजक, आइपीएल प्रबंधन, खिलाड़ी, टीम के स्वामी, क्रिकेट बोर्ड, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद, प्रसारकेंइवेंट कंपनियां, चीयर लीडर्स, गायक, गायिकाऐं सब मालामाल, सबकी जीवन की समस्त कुंठाओं की प्रचुर पूर्ति का समस्त अवसर है। वैसे खिलाड़ी जिनके लिए एक करोड़ पूरा जीवन सपना बना रहता, वे भी पांच आयोजनों की अपनी कीमत से करोडपति बन चुके हैं। और आयोजकों की औकात इतनी कि कोई इनका विरोध करने का साहस तक न कर पाए। जब सबके स्वार्थ की पूर्ति हो रही हो और भोग तथा तरंग की विकृत अभिलाषियों को आनंद मिल रहा हो तो फिर इसकी आलोचना करे कौन? किंतु अगर पूरा आयोजन ही आपके अंदर की रोमांच और वासनाओं को उभारने और उसकी प्रतिपूर्ति कराने या उभारने वाला जलसा है, पीछे की मुख्य प्रेरणा धन है और दर्शकों को केवल रोमांच और तरंग की अनुभूति करानी है तो फिर इसमें सच्चा खेल हो ही नहीं सकता। इसमें यदि कोई यह कहता है कि वह कुछ हजार या लाख रुपए में नो बॉल या वाइड फेंक देगा तो इसमें आश्चर्य कैसा! हो सकता है आयोजक भी कुछ खिलाड़ियों से मैच का रुख बदलने या रोमांचक बनाने के लिए ऐसा करवाते हों।

इसमें कोई खिलाड़ी यदि रेव पार्टी के बाद किसी कामुक हसीना के साथ यौनक्रिया का आनंद उठाना चाहता है तो फिर उसमें बाधा कैसी और क्यों? वह वहां सेलिब्रिटी भी है और उसकी जेब में देने को धन भी है। वह चाहे किसी की गर्लफ्रेंड हो, तथाकथित मंगेतर हो या किसी की बीवी। उन्मुक्त संसार में बाधा तो मौलिक अधिकार पर हनन के समान का अपराध हुआ। इसमें एक खिलाड़ी के चुम्बन प्रयास या उस अमेरिकी बाला को बाहों में भरने पर मचा बावेला ऐसा ही है जैसे वासना के नंगे बाजार में किसी एक व्यक्ति को उसकी चाहत की सजा दी जाए। शाहरुख का शराब पीकर आने और गार्ड से बकझक को भद्र खेल में अभद्रता बताने वाले यह भूल जाते हैं कि धन देकर टीम और मैदान खरीदने वाले को आप उनकी तरंग के अनुसार व्यवहार से रोकेंगे तो उसे वैसा ही लगेगा कि हमारे पैसे से हमारे नाम पर खरीदे गए घर में हमें ही घुसने से रोका जा रहा है, जबकि वहां के गार्ड की ड्यूटी होनी चाहिए उन्हें एवं उनके परिवार-मित्रों को बिना पूछताछ के आवभगत करना। इसके विपरीत एमसीए उन्हें मैदान में प्रवेश प्रतिबंधित का फैसला करती है। उसने धन देकर मैदान आयोजन तक किराए पर लिया है, आप कैसे रोक सकते हैं। पिछले वर्ष जुलाई में संसद की समिति ने आईपीएल पर जो रिपोर्ट दी है उसमें अनेक कुकर्मों का खुलासा है। उसके बाद किसी अन्य जांच की आवश्यकता ही नहीं थी। सरकार को आयोजन को तुरत रोकने का कदम उठाना चाहिए था। अगर ऐसा नहीं हुआ तो क्यों?

भारतीय क्रिकेट बोर्ड की प्रतिक्रिया से ऐसा लग रहा है मानो यह आयोजन विशुद्ध खेल का आयोजन हो, आयोजकों, टीम के स्वामियों, खिलाड़ियों और प्रायोंजकों के सामने केवल क्रिकेट नामक खेल को एक नया मुकाम देना हो, और सबकी प्रतिबद्धता केवल और केवल खेल हो! क्या यह बात बोर्ड की नजर में नहीं है कि खिलाड़ियों को चेक से जितना भुगतान होता है उससे ज्यादा उन्हें नकद दिया जाता है जिसका हिंसाब न दाता के खुले खाते में है और न प्राप्तकर्ता के? अगर बोर्ड को और देश को भी स्टिंग में किसी खिलाड़ी के कहने से यह पता चलता है कि उसकी कीमत 30 लाख है लेकिन मिलता है डेढ़ करोड़ जिसका कोई हिंसाब नहीं तो फिर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। हमारे देश के नियमों-कानूनों से बचने के लिए लोग बैंकों से जितना लेनदेन करते हैं उससे कई गुणा ज्यादा नकदी में होता है। आईपीएल जैसे आयोजन में नकद और गुप्त भुगतान का परिमाण बहुत ज्यादा होगा और इसमें ज्यादातर खिलाड़ी, कलाकार, जुड़ी कंपनियां, बाहर से आयोजन के बहाने आने वाली बालाएं सब दोषी होंगी। सुरा ओर सुन्दरी के नग्न खेल का किसे पता नहीं है? जाहिर है, जांच होनी है तो सम्पूर्ण ढांचे और उससे जुड़े हरएक व्यक्ति की हो, लेकिन सबसे पहले इस आयोजन को प्रतिबंधित करना चाहिए। क्रिकेट खेल के नाम पर विकृतियों के उन्मुक्त उभार और उसके पूरा होने के नंगे अवसर वाला यह आयोजन किसी भी सभ्य समाज पर एक दाग है।

स्वामी आर्यवेश ने दक्षिण अफ्रीका में किया वेद प्रचार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के संयोजक स्वामी आर्य वेश जी दिनांक 13 अप्रैल से 12 मई 2012 तक दक्षिण अफ्रीका में वेद प्रचार के लिए आर्य युवक सभा के निमंत्रण पर गए। ब्र. दीक्षेन्द्र भी साथ में रहे तथा अनेकों स्थानों पर प्रवचनों का सराहनीय कार्यक्रम रहा। परिषद् की ओर अनेकों शुभकामनाएं एवं बधाई। - डॉ. अनिल आर्य

जहां नहीं होता कभी विश्राम-आर्य युवक परिषद् है उसका नाम
युवा शक्ति को चरित्रवान, देशभक्त, ईश्वर भक्त, संस्कारवान बनाने का अभियान
जी हां 1 नहीं 10 ग्रीष्मकालीन शिविरों का विस्तृत कार्यक्रमः-

1. दिल्ली आर्य कन्या शिविर
दिनांक 20 मई से 27 मई 2012 तक
स्थानः आर्य समाज, पुराना राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

2. एटा आर्य युवक शिविर
दिनांक 21 मई से 27 मई 2012 तक
स्थानः प्राइमरी स्कूल, ग्राम लंगुटिया, एटा, उ.प्र.

3. राजस्थान आर्य युवक शिविर
दिनांक 27 मई से 03 जून 2012 तक
स्थानः डी.बी.एम. पब्लिक स्कूल, बहरोड, जिला-अलवर

4. जीन्द आर्य युवक शिविर
दिनांक 27 मई से 03 जून 2012 तक
निराकार ज्योति निकेतन, ग्राम-खाराकरम जी, जीन्द

5. झारखण्ड आर्य कन्या शिविर
दिनांक 03 जून से 10 जून 2012 तक
स्थानः आर्ष कन्या गुरूकुल, आर्य समाज, नवाबगंज, हजारीबाग, झारखण्ड

6. दिल्ली आर्य युवक निर्माण शिविर
दिनांक 09 जून से 17 जून 2012 तक
स्थानः ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-7, पुष्प विहार, नई दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन मालवीय नगर)

7. सोनीपत आर्य कन्या शिविर
दिनांक 11 जून से 17 जून 2012 तक
स्थानः दिल्ली विद्यापीठ, देवडू रोड, सोनीपत, हरियाणा

8. पलवल युवक निर्माण शिविर
दिनांक 11 जून से 17 जून 2012 तक
स्थानः आर्य समाज जवाहर नगर (कैम्प), पलवल, हरियाणा

9. फरीदाबाद युवक निर्माण शिविर
दिनांक 17 जून से 24 जून 2012 तक
स्थानः ग्रीन फील्ड प. स्कूल, ग्राम सुनपेड़, बल्लभगढ़, फरीदाबाद

10. करनाल युवक चरित्र निर्माण शिविर
दिनांक 20 जून से 24 जून 2012 तक
स्थानः आर्य समाज प्रेम नगर, करनाल, हरियाणा

मजहबी आरक्षण के खतरे

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक

आंध्र के उच्च न्यायालय ने कमाल कर दिया। करेले को नीम पर चढ़ने से रोक दिया। जाति के आधार पर दिए जा रहे आरक्षण से यह देश पहले से ही खोखला हो रहा है, अब मजहब के आधार पर भी आरक्षण दिया जाने लगा था। पांच राज्यों में पिछले दिनों चुनाव जीतने की बड़ी चुनौती कांग्रेस के सामने थी। उसे नई तिकड़म सूझी। उसने सोचा कि यदि उसे मुसलमानों के थोकबंद वोट हथियाने हैं तो वह उनके सामने आरक्षण की गाजर लटका दे। उ.प्र. में इस हथकंडे के सफल होने की आशा सबसे ज्यादा थी। दिसंबर 2011 में केन्द्र सरकार ने घोषणा कर दी कि शिक्षा और सरकारी नौकरियों में मुसलमानों को भी 4.5 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा। लेकिन मुसलमान जरा भी नहीं फिसले। उन्होंने चुनावों में कांग्रेस को सबक सिखा दिया। अब आंध्र के उच्च न्यायालय ने दोहरी मार लगा दी। कांग्रेस के साम्प्रदायिक आरक्षण को राजनीति और कानून दोनों ने रद्द कर दिया।

अदालत ने सरकार के इस आदेश को चलताऊ बताया। उसका कहना है कि सरकारी वकील यह नहीं बता सके कि 'अल्पसंख्यक' का अर्थ क्या है? क्या सिर्फ मुसलमान ही अल्पसंख्यक हैं? क्या भारत में दूसरे अल्पसंख्यक नहीं हैं? क्या ईसाई, बौद्ध, सिख, यहूदी और पारसी अल्पसंख्यक नहीं हैं? यदि अल्पसंख्या का आधार धर्म या मजहब ही है तो मुसलमानों के मुकाबले ये अन्य धर्मावलंबी तो कहीं ज्यादा बड़े अल्पसंख्यक हैं, क्योंकि इनकी संख्या तो बहुत कम है। हालांकि अदालत ने यह तर्क नहीं दिया है लेकिन तर्क तो यह भी बनता है कि यदि आरक्षण का आधार अल्पसंख्या है तो जो अल्पसंख्यक हैं, उन्हें भी आरक्षण मिलना चाहिए और ज्यादा मिलना चाहिए। पहले मिलना चाहिए। सरकारी आदेश में इसके बारे में कोई संकेत नहीं है यानि अदालत की नजर में यह आदेश जारी करते समय सरकार ने लापरवाही बरती है। अदालत की यह आलोचना जरा नरम है। उसे कहना चाहिए था कि सरकार ने लापरवाही नहीं बरती है बल्कि उसने मुसलमानों को मवेशियों का रेवड़ बनाकर बड़ी चतुराई से उनके थोकबंद वोट खींचने की साजिश की थी।

वास्तव में हमारी अदालतों को चाहिए कि वे 'अल्पसंख्यक' शब्द पर ही गंभीर बहस चलाएं। राजनीति में 'अल्पसंख्यक' कौन है? वही है, जो खुद हार जाए या जिसका उम्मीदवार हार जाए। हर चुनाव में मतदाताओं का एक हिस्सा बहुसंख्यक सिद्ध होता है और दूसरा अल्पसंख्यक। बहुसंख्या और अल्पसंख्या बदलती रहती है। लोकतंत्र में कोई भी स्थायी अल्पसंख्यक और स्थायी बहुसंख्यक नहीं हो सकता। भाषा, धर्म, जाति, रंग-रूप में जरूर स्थायी अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक हो सकते हैं लेकिन उनके नाम पर चलनेवाली राजनीति क्या शुद्ध राजनीति होती है? वह भ्रष्ट राजनीति होती है। मुसलमानों को आरक्षण का टुकड़ा फेंककर अपने जाल में फंसाने के अलावा 4.5 प्रतिशत आरक्षण का मकसद क्या था? यदि सरकार का तर्क यह है कि उसने मुसलमानों को नहीं बल्कि मुसलमानों में जो पिछड़े हैं, सिर्फ उन्हें आरक्षण दिया है तो यह तर्क भी बड़ा लचर है। इसके विरूद्ध कई तर्क खड़े हो जाते हैं।

सबसे पहला तर्क तो यह है कि आप कैसे तय करेंगे कि मुसलमानों में पिछड़ा कौन है? यह सिर्फ जातियों के आधार पर ही तय करेंगे यानि आप कानूनी तौर पर यह मानेंगे कि इस्लाम में भी जातियां होती हैं। यह इस्लाम के सिद्धांतों के बिल्कुल विरूद्ध है। इस्लाम तो इन्सानी बराबरी का धर्म है। इस्लाम पर जातिवाद थोपकर क्या आप उसका हिन्दूकरण नहीं कर रहे हैं?

दूसरा, मुसलमानों में जिन जातियों को आप पिछड़ा मान लेंगे वे फायदे में रहेंगी और जिन्हें पिछड़ा नहीं मानेंगे, वे नुकसान में रहेंगी। आप धार्मिक आरक्षण के नाम पर अपना उल्लू तो सीधा कर लेंगे लेकिन गरीब मुसलमानों को आपस में लड़वा देंगे। उनमें फूट डलवा देंगे।

तीसरा, यदि आप गरीबी के आधार पर पिछड़ापन तय करते हैं तो फिर गरीबों में भी फर्क क्यों डालते हैं? एक गरीब और दूसरे गरीब में फर्क क्या है? क्या गरीब लोग सिर्फ हिंदुओं और मुसलमानों में ही है, क्या दूसरे मजहबों में नहीं हैं? सिर्फ मजहबों की ही बात नहीं है। यह बात जात पर भी लागू होती है। कोई किसी भी जाति का हो, यदि वह गरीब है तो उसे आरक्षण क्यों नहीं मिलना चाहिए? किसी भी जाति या मजहब के अमीर व शक्तिशाली व्यक्ति को आरक्षण देना सामाजिक न्याय नहीं, सामाजिक अन्याय है।

चौथा, अनेक मुस्लिम संगठनों ने मांग की थी आरक्षण देना है तो सभी मुसलमानों को दें ताकि आरक्षित पदों को भरनेवाले लोग तो मिल सकें। वरना मोची, ठठेरे, लुहार, कुम्हार, भिश्ती, कसाई जैसे मुसलमान सरकारी आरक्षित पदों को कैसे भरेंगे? उन पदों पर पहुंचने की उनमें न तो इच्छा है, न जरूरत और न न्यूनतम योग्यता! दूसरे शब्दों में यह आरक्षण शुद्ध धोखा सिद्ध होगा।

पांचवा, यह आरक्षण मुसलमानों को स्वतंत्र रूप से नहीं दिया गया था। यह पिछड़ों के 27 प्रतिशत के कोटे में से काटकर दिया गया था। यानी अब गांव-गांव में रहने वाले हिंदू पिछड़ों और मुस्लिम पिछड़ों में तलवारें खिंचती। उनमें वैमनस्य फैलता। इसका एक नतीजा यह भी हुआ कि कांग्रेस ने हिंदुओं और मुसलमानों, दोनों के वोट खोए। आंध्र की अदालत ने दो-टूक फैसला देकर भारत के सांप्रदायिक सद्भाव को सबल बनाया है।

छठा, अदालत ने इस सरकारी आदेश को असंवैधानिक करार दिया है, क्योंकि इसका आधार मजहब था। यह कानूनी दृष्टि है। लेकिन राजनीतिक दृष्टि से देखें तो यह मजहबी आरक्षण आगे जाकर पता नहीं कितने और कैसे-कैसे 'नए पाकिस्तानों' को खड़ा कर देगा, क्योंकि हमारे यहां तो मजहबों के अंदर भी अनेक उप-मजहब होते हैं।

इस फैसले के विरूद्ध उच्चतम न्यायालय में अपील करने के बजाय भारत सरकार को चाहिए कि वह मजहब के अलावा जाति के आधार पर दिए जानेवाले आरक्षण पर भी पुनर्विचार करे और यह भी सोचे कि आरक्षण सिर्फ शिक्षा में दिया जाए और नौकरी में बिल्कुल भी नहीं। यदि आरक्षण सिर्फ शिक्षा में दिया जाए तो देश के 80 करोड़ गरीबों की जिंदगी में नया उजाला पैदा हो जाएगा। वे जो भी पद पाएंगे वह किसी कि दया से नहीं बल्कि अपनी योग्यता से पाएंगे। उनके आरक्षण का आधार उनकी जरूरत होगी, उनकी जाति नहीं। वे लोग अपने पद पर पहुंचकर सिर्फ अपनी जाति नहीं पूरे देश की सेवा करेंगे। भारत सबल बनेगा।

ऐमिटी में वीरांगना दल का शिविर व आर्य समाज सैक्टर-11 रोहिणी का उत्सव सम्पन्न

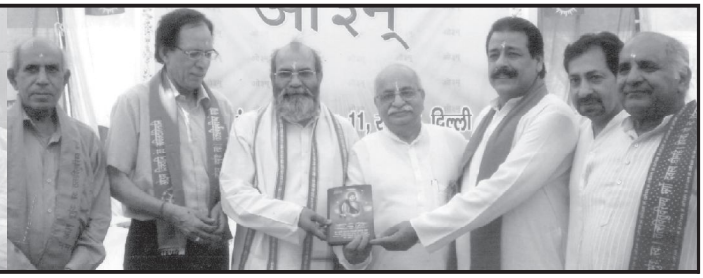

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में 20 मई से 27 मई 2012 तक ऐमिटी कैम्पस, सैक्टर-44, नोएडा में आर्य वीरांगना शिविर सौल्लास सम्पन्न हुआ। शिविर में साध्वी उत्तमायति के निर्देशन में 55 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। समापन समारोह के मंच पर बायें से साध्वी उत्तमायति, समारोह अध्यक्ष डॉ. उमा शर्मा (कैलाश अस्पताल), महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच.), मुख्य अतिथि डॉ. अमिता चौहान, ठाकुर विक्रम सिंह, श्री राजीव आर्य, डॉ. अनिल आर्य दिखाई दे रहे हैं। इस अवसर पर श्री आनन्द चौहान, श्रीमती मृदुला चौहान, श्री अजय चौहान, श्रीमती पूजा चौहान, डॉ. वरूण वीर, डॉ. जयेन्द्र आचार्य, रविन्द्र मेहता, कै. अशोक गुलाटी, लक्ष्मी सिन्हा, गायत्री मीना, शिवकुमार मदान, रमेश चन्द्र, विमला मलिक, आदर्श सरीन, उमा मोंगा, अजय तनेजा, ओम प्रकाश शर्मा, जगदीश गुलाटी, सत्यदेव आनन्द आदि उपस्थित थे। **द्वितीय चित्र में:-** आर्य समाज, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली का वार्षिकोत्सव रविवार 27 मई 2012 को सम्पन्न हुआ। चित्र में श्री शिव नारायण शास्त्री को सम्मानित करते बायें से श्री दुर्गा प्रसाद कालरा, ओम प्रकाश भावल, प्रधान विजय आर्य, डॉ. अनिल आर्य, संयोजक राजीव आर्य व कान्ति प्रकाश अग्रवाल। ध्वजारोहण श्री अशोक बत्रा ने किया व पं. कुलदीप आर्य के मधुर भजन हुए।

'परिवर्तन' ने मनाया श्रमिक अधिकार दिवस व अंतिम विकल्प का विमोचन

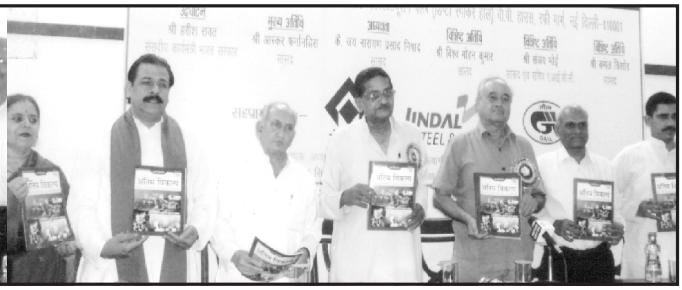

सोमवार 21 मई 2012, परिवर्तन जन कल्याण समिति दिल्ली के तत्वावधान में नई दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में श्रमिक अधिकार दिवस मनाया गया। उपरोक्त चित्र में प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के साथ समारोह अध्यक्ष सांसद कै. जय नारायण प्रसाद निषाद, कांग्रेस राष्ट्रीय महासचिव व सांसद श्री आस्कर फर्नांडीज, सांसद श्री कमल किशोर व परिषद् अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य व महेन्द्र भाई। द्वितीय चित्र में अन्तिम विकल्प का विमोचन करते डॉ. रेखा व्यास, डॉ. अनिल आर्य, कवि विजय गुप्त, पूर्व महापौर डॉ. महेश शर्मा, डॉ. हरिसिंह पाल, सत्यप्रकाश त्यागी व संयोजक श्री देशपाल सिंह राठौर।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली (पंजीकृत) के तत्वावधान में आयोजित

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का निमन्त्रण

स्थान:- ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-7, पुष्प विहार, नई दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन मालवीय नगर)

उद्घाटन समारोह

रविवार 10 जून 2012, प्रातः 11 से 1 बजे तक

मुख्य अतिथि

डॉ. योगानन्द शास्त्री (अध्यक्ष दिल्ली विधान सभा)

अध्यक्षता: श्री आनन्द चौहान (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

विशिष्ट अतिथि: श्री जितेन्द्र नरूला, श्री के. एस. यादव, श्री सूर्यदेव त्यागी

भव्य समापन समारोह

रविवार 17 जून 2012, सायं: 5 से 7:30 बजे तक

मुख्य अतिथि

श्रीमती सविता गुप्ता (महापौर, दक्षिण दिल्ली नगर निगम)

अध्यक्षता: डॉ. अशोक कु. चौहान (संस्थापक अक्ष्यक्ष ऐमिटी)

विशिष्ट अतिथि: डॉ. अमिता चौहान (चेयरपरसन ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल)

कृपया समारोह के पश्चात् ऋषि लंगर दोनों दिन अवश्य ग्रहण करें।

आर्य बन्धुओं व युवकों से अपील

सभी आर्य बन्धुओं, आर्य समाजों के अधिकारियो से अपील है कि शिविर उद्घाटन व समापन समारोह के अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर आर्य युवकों का उत्साह बढ़ाये। इसके लिए अपनी समाज की ओर से स्पेशल बसों का प्रबंध करने की कृपा करें। ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, घी, रिफाइण्ड, सब्जी, मसाले आदि से सहयोग करें। सभी शिविरार्थी शनिवार 9 जून को सायं 4 बजे शिविर स्थल पर पहुंचकर रिपोर्ट करें।

आर्य समाज, विनय नगर, सरोजनी नगर का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज, सरोजनी नगर, नई दिल्ली के चुनाव में श्रीमती रमा भारद्वाज-प्रधान, श्री कृष्ण वैदिक राणा-मंत्री व श्री राजेन्द्र चण्डोक-कोषाध्यक्ष चुने गए। तदार्थ बधाई।

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धाजंलि

1. श्रीमती राज महाजन धर्मपत्नी श्री सोमदत्त महाजन, जनकपुरी, दिल्ली का निधन दिनांक 28 मई 2012 को हो गया।
2. श्रीमती सविता अरोड़ा धर्मपत्नी श्री ओम प्रकाश अरोड़ा, राजौरी गार्डन, दिल्ली का निधन दिनांक 24 मई 2012 को हो गया।
3. श्री रघुनाथ प्रसाद (पिता श्री पी.के. मित्तल, एडवोकेट, फरीदाबाद) आयु 87 वर्ष का निधन दिनांक 26 मई 2012 को हो गया।
4. श्री जितेन्द्र डावर, अमर कॉलोनी के बड़े भाई का निधन गत दिनों हो गया।
5. श्रीमती ज्ञानदेवी आर्या (माता श्री अमरनाथ आर्य, सोनीपत) का निधन 19 मई 2012 को हो गया। युवा उद्घोष की ओर से श्रद्धांजलि।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9910649696, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970